अब्दुल परिवार के लिए खरीदारी करने निकला

भारतीय वैज्ञानिकों का कोविद-19 के विरूद्ध प्रयास
एक स्वप्रेरित मंडली

IndiSciCovid

https://indscicov.in/

Indian Scientists' Response to COVID-19

अब्दुल अचानक घबराकर जाग गया : अरे ! अजीत सर की क्लास के लिए मुझे फिर से देर हो जाएगी। अब तो वे मुझे अंतिम परीक्षा में बिलकुल नहीं बैठने देंगे !

फिर उसे याद आया कि लॉकडाउन चल रहा है; कॉलेज बंद है और वह अपने माता-पिता के घर है. उसने करवट बदल कर फिर से सोने की कोशिश की. उसके एक कमरे के घर में पहले से ही काफी हलचल हो रही थी -- अम्मी सबके लिए चाय बना रही थी, दादी की बुनाई वाली सलाइयों की टिक-टिक चल रही थी, और अब्बा नमाज़ पढ़ रहे थे. उसने सोचा कि अब उठना ही बेहतर होगा, क्योंकि ऐसे माहौल में वह वैसे भी नहीं सो पायेगा.

ब्रश करते हुए, अब्दुल अपने हॉस्टल के कमरे को याद कर रहा था. जिसमें उसके साथ सिर्फ उसका साथी सतीश रहता था. वह कमरा उसके घर से ज़्यादा बड़ा नहीं था. उसे याद आ रहा था कि कैसे दोस्तों के साथ चाय पर गर्मागर्म राजनीतिक बातें हुआ करती थीं और कॉलेज में उसे कितनी आज़ादी महसूस होती थी. मगर सारे कॉलेज और हॉस्टल तीन हफ्ते पहले बंद कर दिए गए थे, और वह दो खचाखच भरी हुई ट्रेनों में सफर करके और फिर तीन घंटे टेम्पो में सवारी करके घर पहुँचा था ! वे बहुत तनावपूर्ण दिन थे, और आख़िर घर पहुँच कर उसे कुछ पल राहत और खुशी महसूस हुई थी.

“अब्दुल, कितनी देर हो गई है. मैंने तुमसे कहा था कि मुझे आज बाज़ार से मटन और टमाटर चाहिए. जाकर जल्दी से ले आओ! दुकानें जल्द ही बंद होने लगेंगी,” अम्मी चिल्लाईं. “लेकिन सावधान रहना. मास्क पहनो और किसी चीज़ को छूना मत. लोगों से दूरी रखना...”, अम्मी ढेर सारी सावधानियां गिनाने लग गईं.

“मेरी ब्लड प्रेशर की दवाइयां ख़तम होने वाली है. ज़रा रास्ते में दवा की दूकान से उसका पता कर लेना”, दादी ने कहा.

“ठीक है ठीक है, मैं जा रहा हूं. लेकिन मैं कल नहीं जाऊँगा, और उसके बाद दो दिनों तक भी बाहर नहीं निकलूँगा. जो कुछ चाहिए अभी बता दो!” अब्दुल ने कहा.

“बेटा, मेरे लिए अखबार भी ले आओगे न? अगले दो दिनों का भी लेते आना अगर मिल जाए तो!”, अब्बा ने मज़ाकिया लहजे में कहा. दादी को छोड़ सब लोग ज़रा से चिढ़ गए, पर वे सब जानते थे कि उनकी ऐसी हल्की-फुल्की बातें ऐसे समय में माहौल को थोड़ा ख़ुशमिजाज़ बनाए रखती थीं.

अब्दुल की बड़ी बहन विदेश में थी, लेकिन रोज़ रात को फ़ोन करके उन सबको बताती रहती थी कि उनको क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए. उसी ने तय किया था कि घर से बाहर जाकर ज़रूरत के सामान लाने का काम अब्दुल को ही करना चाहिए. दीदी ने कहा था, “बाकी सब उम्र में बड़े हैं और इसलिए उनके लिए जोख़िम ज्यादा है”, और “वैसे भी तुम घर में रहकर और क्या करोगे.” हाल ही में उसने अब्दुल से कहा था कि जब भी बाहर जाए, मास्क पहन कर ही जाए.

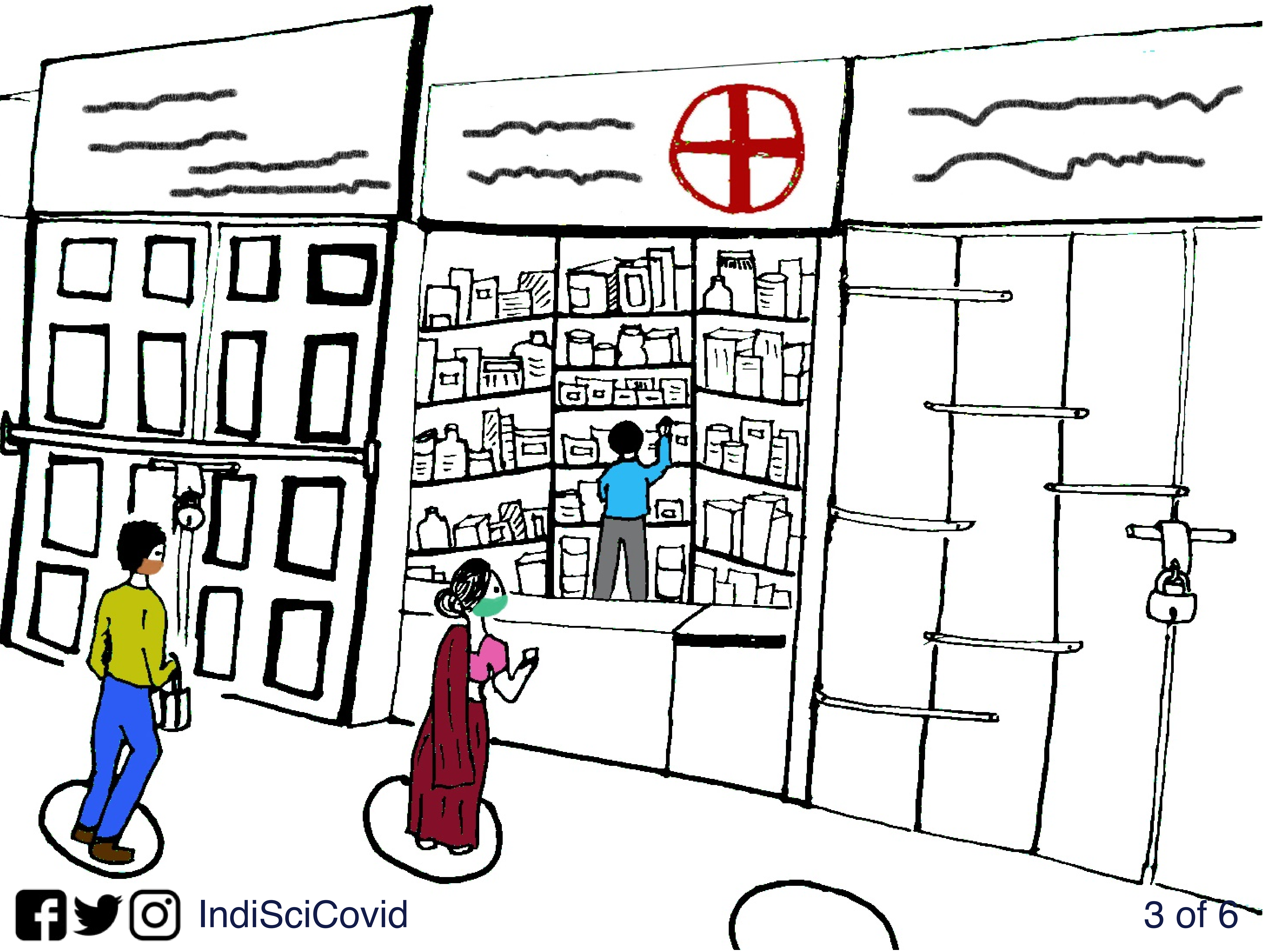

अब्दुल ने एक धुला हुआ मास्क उठाया जो दादी ने एक पुराने दुपट्टे से कपड़ा काटकर सिला था. अम्मी बोली, “बाहर के लिए मैंने दरवाज़े के पास एक शॉल भी रखी है, वह भी ले जाओ अब्दुल”. “बहुत गर्मी है अम्मी! मैं शॉल नहीं ले जाने वाला. वापस आते ही पहने हुए कपड़े धो दूँगा,” कहते हुए अब्दुल ने चप्पल पहनी और निकल पड़ा.

अब्दुल को कतार में चॉक से बनाए हुए गोल निशान में खड़े रहकर इंतज़ार करना पड़ा, पहले सब्ज़ी की दूकान पर और बाद में दवा की दुकान पर. अच्छा था कि उसने फ़ोन में अनलिमिटेड डेटा प्लान ले रखा था, इंतज़ार करते हुए कम से कम वह अपने कॉलेज के दोस्तों से गपशप कर सकता था.

आखिर में वह कसाई की दूकान पर पहुँचा. उस वक्त वहाँ उसके अलावा और कोई नहीं था. करीम चाचा दुकान के अंदर से मटन काटते हुए ज़ोर से बोलकर सवाल पूछने लगे, “घर पे सब ठीक तो है? क्या लगता है, यह लॉकडाउन कब ख़तम होगा ? तुम तो फ़ोन पे सारी खबरें पढ़ते होगे न, क्या कह रहे हैं वो लोग?” अब्दुल ने अपना फ़ोन ज़ेब में रखा. परिवार से बाहर किसी से आमने-सामने बात करके अच्छा लग रहा था, भले ही वे दुकान के दूसरे कोने से चिल्ला रहे हों, और भले ही उनकी आवाज़ मास्क के कारण साफ ना आ रही हो. “हाँ हाँ, घर पे सब ठीक है. बस थोड़ी चिंता में हैं. लॉकडाउन के बारे में नहीं पता चाचा! लगता है अभी कुछ दिन तो और रहेगा. पता नहीं उनकी क्या योजना है,” अब्दुल ने जवाब दिया. वह कुछ देर वहीं रुक कर आर्थिक हालात के बारे में बातें करता रहा.

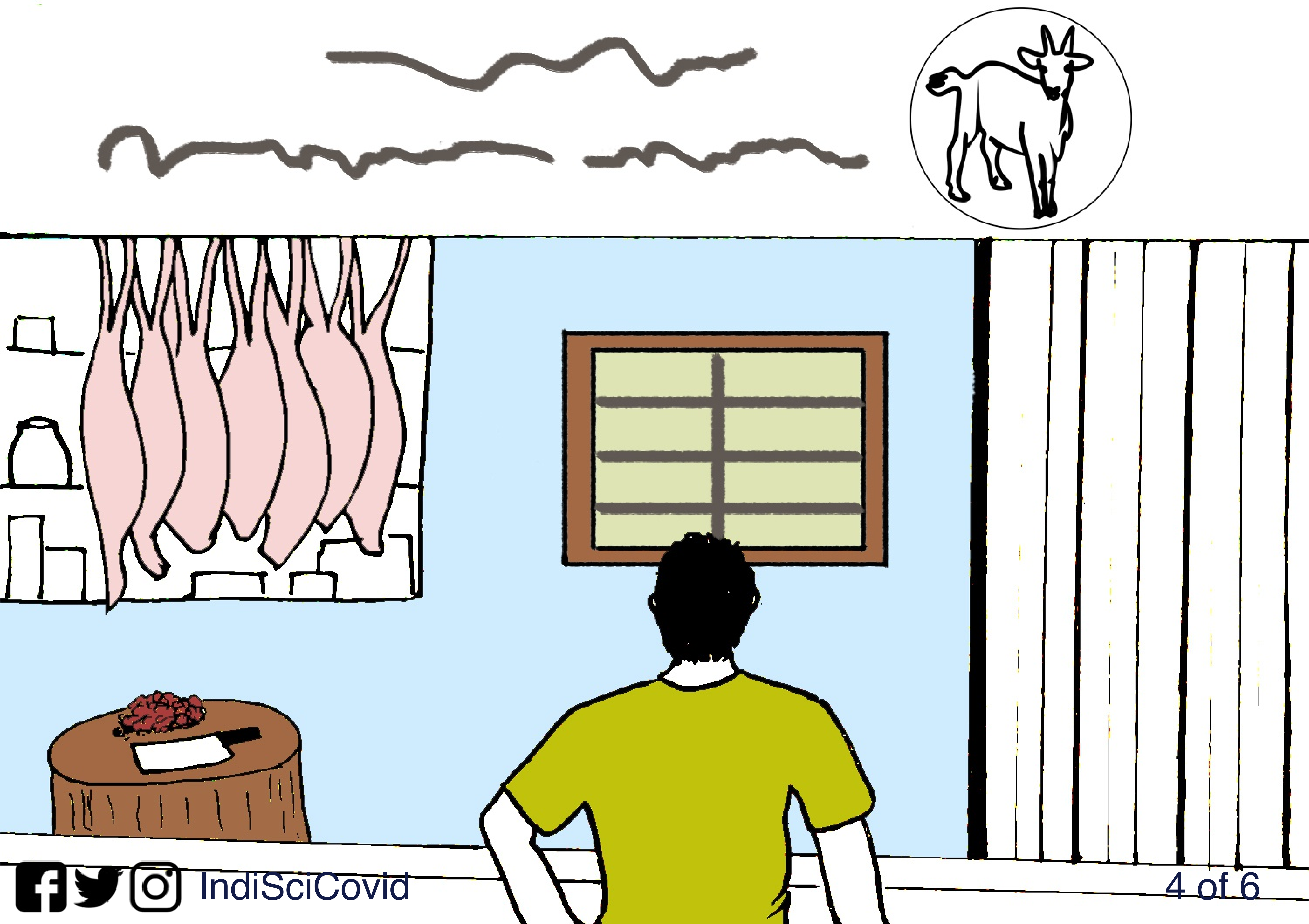

जब तक अब्दुल घर पहुँचा, अम्मी ने दरवाज़े के बाहर एक पानी का मग, साबुन, और एक सूखा कपड़ा रख दिया था. उसने चप्पल उतारकर हाथ साबुन से धोकर पोंछे. फिर उस सूखे कपड़े को साबुन वाले पानी में भिगो कर दवाइयों का डब्बा पोंछा. अम्मी ने फ़ोन साफ करने के लिए सैनिटाइज़र और साफ रूमाल भी रखा था. पिछली बार फ़ोन साफ नहीं करने के लिए उसे अम्मी से काफी डाँट पड़ी थी. उसे धमकी दी गयी थी, कि दोबारा ऐसी गलती पर उसका फ़ोन ज़ब्त कर लिया जाएगा.

अंदर आ कर उसने मटन और सब्जियाँ अम्मी को दे दीं. अम्मी सारी सब्जियों को अपने छोटे से फ्रिज में डालने से पहले अच्छे से धोने लगी. अब्दुल ने दवाइयों का डब्बा टेबल पे रखा और नहाने व कपड़े और मास्क धोने के लिए चला गया.

बाहर आकर उसने सावधानी से दवाइयों का डब्बा खोला और गोलियाँ कांच की शीशी में डाल दीं. उसकी दादी बहुत बूढी थी, और उसे उनके कोविड-19 हो जाने का बहुत डर रहता था. फिर उसने खाली डब्बा घर के दरवाज़े के पास रखे कचरे के डब्बे में फेंक दिया. उसने दोबारा हाथ धोये और अतिरिक्त सावधानी के लिए दवाइयों की शीशी को बाहर से साबुन के पानी से धोया ताकि अगर शीशी पर कुछ वायरस रह गए हों तो वे भी धुल जायें. इसके बाद उसने दादी को शीशी देते हुए कहा, “ये लो आपकी दवाइयाँ दादी, कल ही माल आया था दुकान पे.”

बालकनी में कपड़े सुखाते हुए उसे याद आया कि वह अब्बा का अख़बार लाना भूल गया था. उसने सोचा, खैर कोई बात नहीं, इसी बहाने आज सबको कुछ और मज़ाक सुनने को मिल जायेंगे.

इन कहानियों का अभिप्राय दी गयी जानकारी को प्रस्तुत करने के लिए कुछ उदाहरण प्रदान करना है। इस कारण से यहाँ जानकारी को सरल रूप में ही प्रस्तुत किया जा सकता है। विस्तृत जानकारी और वैज्ञानिक सटीकता के लिए कृपया वेबसाइट पर उपलब्ध अन्य सहायक लेख अवश्य देखें।